क्या सार्स एक विश्वव्यापी महामारी बनेगा?

प्रवीण कुमार

सार्स वायरस घुमक्कड़ तो खूब है लेकिन शायद घातक नहीं। यह अब तक 25 देशों की सैर कर चुका है। इसका अंतिम पड़ाव है भारत (गोवा)। लेकिन इसके शिकार लोगों में मरने वालों का प्रतिशत 4 से भी कम है। इसका पर्यटन पर गहरा असर पड़ा है। वैश्विक महामारी के डर से दक्षिण पूर्व एशियाई नेतृत्व ने बैंकॉक में एक शिखर बैठक बुलाने की मांग की है।

भारत में सार्स (अति तीव्र श्वसन सिंड्रोम) का अधिकारिक रूप से पुष्ट पहला मामला मुम्बई के सहारा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे और गोवा के डबोलिम हवाई अड्डे पर यात्रियों की निगरानी में हो रही ढिलाई की पोल खोल देता है। रोगी एक मैरीन इंजीनियर है जो सिंगापुर में छुट्टियां बिताकर 30 मार्च को मुम्बई लौटा था। गोवा पहुंचने से पहले वह दो दिन मुम्बई में अपने परिवार जनों से मिलने ठहरा था। गोवा में 17 अप्रैल को अधिकारिक रूप से उसे सार्स पीड़ित घोषित किया गया। तब से उसे असंक्रामक घोषित कर दिया गया है।

2 अप्रैल के दिन केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री सुषमा स्वराज ने देश भर के स्वास्थ्य अधिकारियों की एक बैठक बुलाई। उद्देश्य इस रोग से निपटने के तरीकों पर विचार करना था। अब से अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों में आने वाले तमाम लोगों की अनिवार्य जांच होगी। हवाई अड्डे के कर्मियों को मास्क पहनने की सलाह दी गई है। 3 परत वाले मास्क की कीमत 3 से 5 रुपए है जबकि डिफेंस रिसर्च एण्ड डिज़ाइन संगठन द्वारा तैयार मास्क की कीमत 2000 रुपए होगी।

चीन के गुआंगडॉन्ग प्रांत में यह फ्लू सरीखी बीमारी

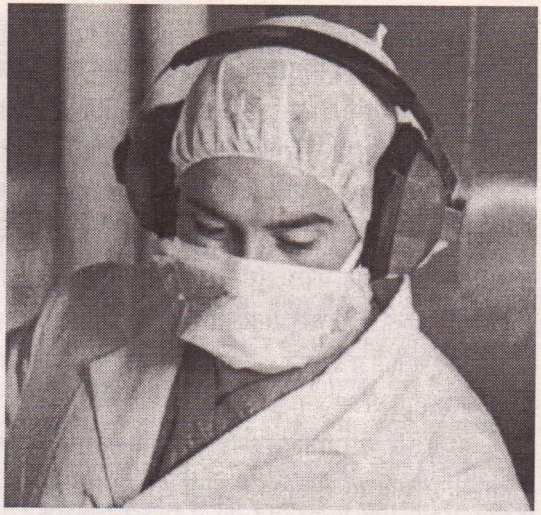

पिछले नवम्बर में शुरू हुई थी। सार्स से सबसे ज़्यादा प्रभावित देश हैं - चीन, हांगकांग, सिंगापुर, कनाडा, ताइवान और वियतनाम। हालांकि इनमें से केवल 4 देशों में स्थानीय संचारण के प्रमाण पाए गए हैं। अधिकांश (17) देशों में लोगों को यह रोग विदेश यात्रा के दौरान लगा। जैसे चीन या हांगकांग की यात्रा के दौरान। अधिकतर मामले हांगकांग के एक होटल में रहने वालों में पाए गए। अभी हाल में मंगोलिया के भीतरी हिस्सों में यह रोग देखा गया है।

सिंगापुर में सार्स के वायरस को फैलने से रोकने के लिए घरों को पूरी तरह से रोगप्रतिबंधक बनाने का इंतज़ाम किया जा रहा है। जून माह तक हर घर को एक थर्मामीटर उपलब्ध कराया जाएगा और लोगों के तापमान की जांच उनके दैनंदिन कामों की फेहरिस्त में जुड़ जाएगी।

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने सार्स को 21वीं सदी की पहली गम्भीर और आसानी से स्थानांतरित हो जाने वाली नई बीमारी की संज्ञा दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने दक्षिण चीन और हांगकांग की ओर यात्रा न करने की ताकीद की है। संगठन ने चीन पर इस महामारी को छुपाने का आरोप लगाया है। बेजिंग से आए एक भारतीय पत्रकार का कहना है कि शहरों की बड़ी सड़कों पर सुरक्षा मास्क नदारद थे। बेजिंग जाती सिंगापुर एयरलाइंस की फ्लाइट में किसी भी एयरहॉस्टेस ने मास्क नहीं पहना था। मास्क 95 प्रतिशत

तेलरहित ठोस और तरल कणों को रोक लेता है। हालांकि इस रोग के अधिकांश मामले और मौतें चीन में हुई हैं लेकिन चीनी विदेश मंत्रालय ने इस मामले को राजनैतिक रंग देने की विदेशी मीडिया की प्रवृत्ति की भर्त्सना की है। वियतनाम में सेना ने राजधानी के अंतर्राष्ट्रीय अस्पताल को संदूषण रहित करने के आदेश जारी किए हैं।

माना जा रहा है कि सार्स रोग पूर्व में न पहचाने गए एक वायरस से होता है। यह कोरोना वायरस समूह का एक सदस्य है। कैलिफोर्निया और सैन फ्रांसिस्को विश्वविद्यालय के मेडिकल सेंटर के डॉ. जॉन कॉन्टे के मुताबिक सार्स लोगों के बीच नज़दीक के सम्पर्क से फैलता है। संभावना यह है कि ये वायरस बीमार व्यक्ति की खांसी/छींक की फुहार के साथ निकलते हैं। अब ये सांस के ज़रिए या आंखों की कंजक्टाइवा झिल्ली के ज़रिए किसी और व्यक्ति में प्रवेश कर जाते हैं। यह सम्भावना भी है कि सार्स हवा के ज़रिए या संदूषित चीज़ों को छूने भर से भी फैलता हो।

किसी भी रोग के तीव्र गति से फैलने के लिए ज़रूरी है कि वह एक व्यक्ति से दूसरे में तीव्र गति से संचरण करने की क्षमता रखता हो - खास तौर पर हवा के माध्यम से। दूसरी बात यह है कि उसे इतने मेज़बान मिलें कि उसकी गति बनी रहे। प्लेग और इंफ्लुएंज़ा - केवल यही दो रोग प्रसार की इन दो शर्तों को पूरा करते हैं।

नए-नए रोग दिखाई पड़ने का एक कारण तो यह है कि पर्याप्त भोजन के फलस्वरूप बढ़ी हुई आबादी शहरों में भीड़भाड़ की परिस्थिति में रहती है। दूसरा कि कई बार इंसान मवेशियों, सुअरों, भेड़-बकरियों व मुर्गे-मुर्गियों के करीब रहते हैं। इन दोनों वजहों से रोगों को प्रजातियों का अवरोध पार करने का मौका मिला। इंफ्लुएंज़ा सुअरों और बत्तखों से और एड्स शायद अफ्रीका के हरे बंदरों से हम तक पहुंचा।

कोरोना वायरस इंसानों के अलावा कई अन्य प्रजातियों को प्रभावित करता है। श्वसन या आंत के रोग प्रमुखतः कोरोना वायरस के कारण होते हैं। हालांकि कई सारे कोरोना वायरस हेपटाइटिस, तंत्रिका सम्बंधी या प्रतिरक्षा सम्बंधी रोगों का भी कारण बनते हैं।

हांगकांग के स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, हो सकता है कि कॉकरोच सीवेज पाइप से अपशिष्ट पदार्थों को लेकर एमॉय गार्डन्स के घरों में पहुंचे हों। गौरतलब है कि इसी जगह पर सबसे पहले इस रोग के होने की रिपोर्ट मिली थी। अगर सार्स कॉकरोच के ज़रिए फैलता है तो घनी आबादी वाले क्षेत्रों में इस पर काबू पाना मुश्किल हो जाएगा।

शिनाख्त

अभी तक डॉक्टर लोग संदिग्ध मामलों में खून के नमूने में रोग-कारकों की पहचान के लिए एण्टीबॉडी परीक्षण और कोशिका-कल्चर करते हैं। लेकिन यह तरीका अक्षम पाया गया है। एक रोगी के शरीर में पर्याप्त मात्रा में एण्टीबॉडीज़ बनने में दो-तीन हफ्ते का समय लग जाता है। इस समय तक या तो रोगी पूरी तरह ठीक हो जाता है या फिर उसकी

कोरोना वायरस

कोरोना वायरस एक आर.एन.ए. वायरस है। यानी उसका अनुवांशिक पदार्थ डी.एन.ए. की बजाए आर.एन.ए. के रूप में होता है। अधिकांश कोरोना वायरस एक विशिष्ट प्रजाति तक सीमित हैं। मसलन, कैनाइन (कुत्तों का) कोरोना वायरस, फेलाइन (बिल्लियों का) कोरोना वायरस, आंतों का कोरोना वायरस, इंसानों के श्वसन का कोरोना वायरस वगैरह। इंसानों में 15-30 प्रतिशत सर्दी-खांसी (खास तौर पर जाड़ों में होने वाली) का कारण कोरोना वायरस ही है। इसका असर ऊपरी श्वसन तंत्र पर पड़ता है। यह महामारी 2-3 सालों के अंतराल से फैलती है।

अधिकांश कोरोना वायरस सांस या मल के ज़रिए निकल जाते हैं। शरीर में पैदा एण्टीबॉडीज़ रोग की शिनाख्त के लिए उपयोगी हैं। मगर इनसे हमें पुनः संक्रमण से बचाव नहीं मिलता। इनसे हममें रोग प्रतिरोध उत्पन्न नहीं होता। पालतू जीवों के कोरोना वायरसों के विरुद्ध टीका तैयार हो चुका है।

हालत गंभीर हो जाती है। यूएसए के सेंटर फॉर डिसीज़ कंट्रोल एण्ड प्रिवेंशन (सीडीसी) के वैज्ञानिकों और कनाडा में जीनोम साइंसेज़ सेंटर के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्होंने सार्स के कोरोना वायरस का जिनेटिक कोड पता लगा लिया है। वे उम्मीद करते हैं कि इस वायरस से संक्रमित रोगी के परीक्षण के लिए वायरल जीनोम् के एक हिस्से का इस्तेमाल हो पाएगा। शृंखला की जानकारी से एण्टी वायरल एजेंट और वैक्सीन बनाने में भी मदद मिलेगी। सार्स वायरस के जीनोम की लम्बाई 29,727 क्षार है और यह अन्य कोरोना वायरसों के समान है।

लक्षण

सार्स के लक्षण इंफ्लुएंज़ा के समान हैं। लेकिन रोगी की छाती के एक्स-रे से जो पैटर्न नज़र आता है वह निमोनिया के ज़्यादा करीब है। आम तौर पर रोगी को 100.4 फेरनहाइट से ज़्यादा बुखार हो जाता है और खांसी, सांस लेने में तकलीफ होने लगती है।

इसके अलावा रोग की पहचान का एक लक्षण यह भी है कि रोगी या तो पिछले 10 दिनों में उस स्थान पर गया हो जहां सार्स का प्रकोप हो या ऐसे किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आया हो जिसे सांस लेने में परेशानी हो और जो सार्स क्षेत्र में घूमा हो। सम्पर्क में आने से आशय है रोगी की परिचर्या करना, उसके साथ रहना या उसकी सांसों या शरीर के द्रवों के प्रत्यक्ष सम्पर्क में आना। शरीर में वायरस पहुंचने के बाद 2 से 7 दिनों में व्यक्ति को सूखी खांसी और सांस में तकलीफ हो सकती है। कभी-कभी यह अवधि दस दिनों की हो सकती है। अधिकांश रोगी 25 से 70 साल के हैं - ये सभी तंदुरुस्त लोग थे। खबर है कि कई सारे स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सार्स के रोगियों की सेवा सुश्रुषा के बाद यह रोग हो गया।

चूंकि सार्स की शिनाख्त का कोई आसान परीक्षण नहीं है इसलिए कैलिफोर्निया मेडिकल सेंटर के स्वास्थ्य कर्मी रोगियों का पता करने के लिए उनसे बुखार, सांस सम्बंधी लक्षण और हाल की यात्राओं के बारे में प्रश्नों का सहारा ले रहे हैं। भारतीय स्वास्थ्य मंत्रालय के अधिकारी भारत में प्रवेश करने वाले लोगों से पूछे जाने वाले प्रश्नों का एक प्रपत्र तैयार कर रहे हैं।

रोकथाम

इस रोग से बचे रहने के लिए कैलिफोर्निया के मेडिकल सेंटर के विशेषज्ञों की अनुशंसा है - नियमित रूप से साबुन और गुनगुने पानी से हाथ धोना; घरों में रहने वाले सार्स के संदिग्ध रोगियों के लिए सलाह है कि वे खांसते व छींकते समय अपने मुंह और नाक को ढंक कर रखें; सम्भव हो तो मास्क पहनें। अगर किसी कारणवश रोगी मास्क न पहन पाए तो परिवार के अन्य लोग पहनें। मास्क इस तरह पहनें कि सांस उसमें से होकर ही आए।

सार्स के रोगियों को अपने बर्तन, तौलिया या बिस्तर घर के अन्य लोगों से साझा नहीं करना चाहिए। साबुन व गरम पानी से धोने के बाद ही अन्य लोग इन चीज़ों का इस्तेमाल करें। मेज़, कुण्डे, नल जैसी चीज़ें शरीर के द्रवों (पसीने, लार, श्लेष्मा, उल्टी, पेशाब) से संदूषित हो सकती हैं। इन्हें घरेलू रोगाणुनाशकों से साफ कर लेना चाहिए। सफाई करने वालों को दस्ताने पहनने चाहिए, जिन्हें इस्तेमाल के बाद फेंक दिया जाना चाहिए। बुखार और श्वसन रोग खत्म हो जाने के 10 दिन बाद तक इन बातों का ख्याल रखा जाना चाहिए।

उपचार की खोज

यू.एस. के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ हेल्थ के परीक्षण बताते हैं कि सार्स का उपचार दो हफ्तों के भीतर उपलब्ध हो जाएगा। ओरेगॉन में एवीआई बायोफार्मा के डॉ. डेनिस बर्गर के अनुसार सार्स की तरह के कोरोना वायरस के विरुद्ध एण्टीवायरल उपचार मौजूद है। यह एक नई किस्म का उपचार है - संवेदना-रोधी उपचार। इसमें आर.एन.ए. के छोटे टुकड़ों का इस्तेमाल किया जाता है। इन आर.एन.ए. की संरचना वायरस आर.एन.ए. के प्रतिबिम्ब जैसी होती है। ये आर.एन.ए. वायरसों के अहम हिस्सों से जुड़कर इंसानी कोशिकाओं में उसकी प्रतिलिपियां नहीं बनने देते हैं। दरअसल संवेदना रोधी दवा का आर.एन.ए. वायरस के आर.एन.ए. का पूरक होता है और उसमें पूरी तरह से फिट हो जाता है और उसे बेअसर कर देता है। ***(स्रोत फीचर्स)***